Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः॥

अर्जुन उवाच।

किम् तत् ब्रह्म किम् अध्यात्मम् किम् कर्म पुरुषोत्तम ।

अधिभूतम् च किम् प्रोक्तम् अधिदैवम् किम् उच्यते ॥ ८-१ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjuna	Arjuna	अर्जुन ने	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	said	पूछा	विचारले
किम्	Kim	what	क्या है?	काय आहे ?
तत्	Tat	that	वह	ते
ब्रह्म	Brahma	Brahman	ब्रह्म	ब्रह्म
किम्	Kim	what	क्या है ?	काय आहे ?
अध्यात्मम्	Adhyaatmam	Inner Self	अध्यात्म	अध्यात्म
किम्	Kim	what	क्या है ?	काय आहे ?
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
पुरुषोत्तम	PuruShottam	O best among men!	हे पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण !	हे पुरुषोत्तमा कृष्णा !
अधिभूतम्	Adhi-Bhuutam	above the elements	अधिभूत नाम से	अधिभूत
च	Cha	and	और	आणि
किम्	Kim	what	क्या	म्हणजे काय ?
प्रोक्तम्	Proktam	declared	कहा गया है	म्हटले गेले आहे ?
अधिदैवम्	Adhi-Daivam	above the gods	अधिदैव	अधिदैव
किम्	Kim	what	किस को	कशाला
उच्यते	Uchchyate	is called	कहते हैं	म्हणतात ?

अन्वय :- अर्जुन उवाच - हे पुरुषोत्तम ! तत् ब्रह्म किम् ? अध्यात्मम् किम् ? कर्म किम् ? अधिभूतम् किम् प्रोक्तम् ? अधिदैवम् च किम् उच्यते ? ॥ ८ - १ ॥

English translation: -

Arjuna said, "What is that Brahman? What is Inner Self? What is action? O the best among men, Krishna! What is called as above the elements (Adhi-Bhutam) and what is termed as above gods (Adhi-Daivatam)?"

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने पूछा, " हे पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ! वह ब्रह्म क्या है ? अध्यात्म क्या है ? कर्म क्या है ? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है ? और अधिदैव किसे कहते हैं ?"

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुनाने विचारले, " हे पुरुषोत्तमा कृष्णा ! ते ब्रह्म काय आहे ? अध्यात्म काय आहे ? कर्म काय आहे ? अधिभूत म्हणजे काय आणि अधिदैव कशाला म्हणतात ?"

विनोबांची गीताई :-

अर्जुन म्हणाला

ब्रह्म तें बोलिलें काय काय अध्यात्म कर्म तें ।

अधि - भूत कसें सांग अधि - दैव हि तें तसें ॥ ८ - १ ॥

अधियज्ञः कथम् कः अत्र देहे अस्मिन् मधुसूदन ।

प्रयाणकाले च कथम् ज्ञेयः असि नियतात्मभिः ॥ ८ - २ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अधियज्ञः	AdhiyadnyaH	above the sacrifice	अधियज्ञ	अधियज्ञ
कथम्	Katham	how	कैसे है	कसा आहे ?
कः	KaH	who	कौन है	कोण आहे ?
अत्र	Atra	here	यहाँ	येथे
देहे	Dehe	in body	शरीर में	शरीरामध्ये
अस्मिन्	Asmin	here / in this	वह इस	या
मधुसूदन	Madhusoodana	O killer of demon Madhu!	हे मधु राक्षस का वध करनेवाले श्रीकृष्ण !	हे मधु राक्षसाचा वध करणाऱ्या श्रीकृष्णा !
प्रयाणकाले	PrayaaNa-Kaale	at the time of death	अन्त समय में	अंतसमयी
च	Cha	and	और	तसेच
कथम्	Katham	how	आप किस प्रकार	कोणत्या प्रकारे
ज्ञेयः	DnyeyaH	to be known	जानने में	कसे जाणावे ?
असि	Asi	(You) are	आते हैं	आहेस ?
नियतात्मभिः	NiyataatmabhiH	by the self-controlled	युक्त चित्तवाले पुरुषोंद्वारा	संयमित चित्त असलेल्या पुरुषांकडून

अन्वय :- हे मधुसूदन ! अत्र अस्मिन् देहे अधियज्ञः कः कथम् (च अस्ति?) प्रयाणकाले च नियतात्मभिः (त्वम्) कथम् ज्ञेयः असि ? ॥ ८ - २ ॥

English translation:-

Who and how is Adhi-yadnya (above the sacrifice) here in this body, O killer of demon Madhu? And how you are to be known at the time of death by the self-controlled ones?

हिन्दी अनुवाद :-

हे मधु राक्षस का वध करनेवाले श्रीकृष्ण ! यहाँ अधियज्ञ कौन है और वह इस शरीर में कैसे रहता है ? तथा युक्त चित्तवाले पुरुषोंद्वारा , अन्त समय में , आप किस प्रकारसे जाने जाते हैं ?

मराठी भाषान्तर :-

हे श्रीकृष्णा ! या शरीरात अधियज्ञ कोण ? आणि तो कशाप्रकारे आहे ? तसेच संयमी योगी तुला ईश्वराला मृत्युसमयी कसे ओळखतात ? (अर्जुनाने श्रीकृष्णाला वरील सात प्रश्न विचारले होते .)

विनोबांची गीताई :-

अधि यज्ञ कसा कोण ह्या देहीं बोलिला असे ।
प्रयाणीं हि कसे योगी निग्रही तुज जाणती ॥ ८ - २ ॥

श्री भगवान् उवाच ।

अक्षरम् ब्रह्म परमम् स्वभावः अध्यात्मम् उच्यते ।

भूतभाव - उद्भवकरः विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥ ८ - ३ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान् उवाच	Shree Bhagavaan Uvaacha	The Blessed Lord said	श्री भगवान् ने स्पष्टीकरण करते हुए कहा	श्री भगवान श्रीकृष्ण उत्तरले
अक्षरम्	Aksharam	imperishable	अक्षर	अविनाशी
ब्रह्म	Brahma	Brahman	ब्रह्म है	ब्रह्म (आहे)
परमम्	Paramam	supreme	परम	परम
स्वभावः	SvabhaavaH	of one's own being	अपना स्वरूप अर्थात् जीवात्मा	आपले स्वरूप /जीवात्मा
अध्यात्मम्	Adhyaatmam	Inner Self	अध्यात्म नाम से	अध्यात्म
उच्यते	Uchchyate	is called	कहा जाता है	म्हटला जातो
भूतभाव - उद्भवकरः	Bhuuta-Bhaava - UdbhavakaraH	The creative force that causes the origin of beings	भूतों के भाव को उत्पन्न करनेवाला जो	प्राणिमात्रांना उत्पन्न करणारा
विसर्गः	VisargaH	birth	त्याग है	सृष्टिरचनारूपी विसर्ग अर्थात त्याग
कर्मसंज्ञितः	Karma-SandnyitaH	is called action	वह कर्म नाम से कहा गया है	कर्म या नावाने संबोधिला जातो

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - अक्षरम् परमम् ब्रह्म , स्वभावः अध्यात्मम् उच्यते , भूतभाव - उद्भवकरः विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥ ८ - ३ ॥

English translation:-

The imperishable is Brahman, the Supreme. Its dwelling in the individual body is called Adhyatma – the Inner Self. The creative force that causes the birth of beings is called action (Karma).

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् ने स्पष्टीकरण करते हुए कहा , " अविनाशी परम आत्मा ही ब्रह्म है और ब्रह्म का अपना स्वरूप अर्थात् जीवात्मा अध्यात्म नाम से कहा जाता है ; तथा प्राणियों को उत्पन्न करनेवाली ब्रह्म की क्रिया - शक्ति को कर्म कहते हैं । "

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवानांनी उत्तर दिले, " अविनाशी श्रेष्ठ तत्त्व ब्रह्म आहे . त्याच्या स्वकीय भावाचे म्हणजेच अस्तित्वाचे नाव अध्यात्म आहे व प्राणिमात्रांना उत्पन्न करणाऱ्या व्यवसायाचे नाव कर्म आहे . "

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

ब्रह्म अक्षर तें थोर अध्यात्म निज भाव ज़ो ।

भूत - सृष्टि घडे सारी तो ज़ो व्यापार कर्म तें ॥ ८ - ३ ॥

अधिभूतम् क्षरः भावः पुरुषः च अधिदैवतम् ।

अधियज्ञः अहम् एव अत्र देहे देहभृताम् वर ॥ ८ - ४ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अधिभूतम्	Adhibhuutam	above the elements	अधिभूत हैं	अधिभूत
क्षरः	KsharaH	perishable	उत्पत्ति - विनाश धर्मवाले	उत्पत्ती आणि विनाशमय असणारे
भावः	BhaavaH	nature	सब नैसर्गिक पदार्थ	सर्व नैसर्गिक पदार्थ
पुरुषः	PuruShaH	the indweller / the soul	आत्मा	आत्मा
च	Cha	and	और	तसेच
अधिदैवतम्	Adhi-Daivatam	above the gods	अधिदैव है	अधिदैव
अधियज्ञः	Adhi-YadnyaH	above the sacrifice	अधियज्ञ हूँ	अधियज्ञ
अहम्	Aham	I	मैं वासुदेव	मी वासुदेवच
एव	Eva	alone	ही अन्तर्यामीरूप से	केवळ (अंतर्यामीरूपाने)
अत्र	Atra	here	इस	या
देहे	Dehe	in body	शरीर में	शरीरामध्ये
देहभृताम् - वर	Deha-Bhrutaam – Vara	O best of the embodied!	देहधारियों में श्रेष्ठ हे अर्जुन !	देहधारी माणसात श्रेष्ठ हे अर्जुना !

अन्वय :- हे देहभृताम् वर ! क्षरः भावः अधिभूतम् , पुरुषः अधिदैवतम् , अत्र देहे च अहम् एव अधियज्ञः ॥ ८ - ४ ॥

English translation: -

Adhi-bhuta (above the five elements) is the perishable nature and Adhi-daivata (above the gods) is the indweller; I am alone the Adhi-yadnya (above the sacrifice) here in the body, O best of the embodied!

हिन्दी अनुवाद :-

उत्पत्ति और विनाश धर्मवाले सब नैसर्गिक पदार्थ अधिभूत हैं। सब पदार्थों में जो सचेतन पुरुष है, वह आत्मा अधिदैव है। हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन! इस शरीर में मैं स्वयं वासुदेव ही अन्तर्यामीरूप से अधियज्ञ हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

देहधारी लोकांमध्ये सर्वश्रेष्ठ अर्जुना! प्राणिमात्रांचा नाशवंत भाव म्हणजे अधिभूत आहे आणि या सर्व पदार्थात जो सचेतन पुरुष तो अधिदैवत असून, या देहांत मी ईश्वरच अधियज्ञ, म्हणजे सर्व यज्ञांचा अधिपती आहे.

विनोबांची गीताई :-

अधि - भूत विनाशी जें जीवत्व अधि - दैवत।
अधि - यज्ञ असें मी चि ह्या देहीं यज्ञ - पूत जो ॥ ८ - ४ ॥

अन्तकाले च माम् एव स्मरन् मुक्-त्वा कलेवरम् ।

यः प्रयाति सः मद्-भावम् याति न अस्ति अत्र संशयः ॥ ८-५ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अन्तकाले	Anta-Kaale	at the time of death	अन्तकाल में	अंतकाळी
च	Cha	and	भी	सुद्धा
माम्	Maam	Me	मुझ को	माझे
एव	Eva	alone	ही	च
स्मरन्	Smaran	remembering / thinking	स्मरण करता हुआ	स्मरण करीत
मुक् - त्वा	Muktvaa	leaving / having cast off	त्याग कर	त्याग करून
कलेवरम्	Kalevaram	body	शरीर को	शरीराचा
यः	YaH	who	जो पुरुष	जो (पुरुष)
प्रयाति	Prayaati	goes forth	जाता है	जातो
सः	SaH	he	वह	तो
मद् - भावम्	Mad - Bhaavam	My being	मेरे साक्षात् स्वरूप को	साक्षात् माझे स्वरूप
याति	Yaati	goes / attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
न	Na	not	नहीं	नाही
अस्ति	Asti	is	कुछ भी है	असतो
अत्र	Atra	here	इस में	या बाबतीत
संशयः	SaMshayaH	doubt	सन्देह	कोणताही संशय

अन्वय :- यः च अन्तकाले माम् एव स्मरन् कलेवरम् मुक्-त्वा प्रयाति, सः मद्-भावम् याति, अत्र संशयः न अस्ति ॥ ८-५ ॥

English translation:-

And whoever, at the time of death, leaving the body, goes forth remembering Me alone, he attains My being; there is no doubt about this.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य, अन्तकाल में भी, मुझ को ही स्मरण करता हुआ, शरीर को त्याग कर जाता है ; वह मेरे साक्षात् स्वरूप को प्राप्त होता है, इस में कुछ भी सन्देह नहीं है।

मराठी भाषान्तर :-

आणि मरणसमयी माझेच स्मरण करीत, जो देह सोडतो ; तो माझ्याच स्वरूपाला पावतो, यात शंका नाही.

विनोबांची गीताई :-

अंत काळीं हि माझें चि चित्तीं स्मरण राखुनी।

देह सोडुनि गेला तो मिळे मज़ न संशय ॥ ८-५ ॥

यम् यम् वा अपि स्मरन् भावम् त्यजति अन्ते कलेवरम् ।

तम् तम् एव एति कौन्तेय सदा तद् भाव भावितः ॥ ८ - ६ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यम्	Yam	which	जिस	ज्या
यम्	Yam	which	जिस भाव को	ज्या
वा	Vaa	or	अथवा	अथवा
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
स्मरन्	Smaran	remembering / thinking of	स्मरण करता हुआ	स्मरण करीत
भावम्	Bhaavam	nature / object	भाव को	भावाचे
त्यजति	Tyajati	leaves	त्याग करता है	त्याग करतो
अन्ते	Ante	in the end	यह मनुष्य अन्तकाल में	अंतकाळी
कलेवरम्	Kalevaram	body	शरीर का	शरीराचा
तम्	Tam	to that	उस	त्या
तम्	Tam	to that	उस को	त्या (भावाला)
एव	Eva	only	ही	च
एति	Eti	goes	प्राप्त होता है	तो जाऊन मिळतो
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे कुन्तीपुत्र अर्जुन !	हे कुंतीपुत्रा अर्जुना !
सदा	Sadaa	always	क्योंकि वह सदा	(कारण तो) नेहमी
तद्	Tad	that	उसी	त्या
भाव	Bhaava	object / nature	भाव से	भावाने
भावितः	BhaavitaH	thinking of	प्रभावित रहा है	प्रभावित झालेला असतो

अन्वय :- हे कौन्तेय ! यम् यम् वा अपि भावम् स्मरन् अन्ते कलेवरम् त्यजति, सदा तद् - भाव - भावितः (सः) तम् तम् एव एति ॥ ८ - ६ ॥

English translation: -

O Arjuna! Whatever one thinks of at the time of death, one reincarnates into that form.

हिन्दी अनुवाद :-

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! यह मनुष्य अन्तकाल में, जिस जिस भी भाव को स्मरण करता हुआ, शरीर को छोड़ता है; उस उस को ही प्राप्त होता है, क्योंकि वह, सदा उसी भाव का, चिन्तन करने के कारण, नित्य उसी भाव से प्रभावित रहा है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना! अंतकाळी मनुष्य ज्या वासनांचे स्मरण करीत शरीराचा त्याग करतो, त्या वासनांचे तो जन्मभर चिंतन करीत असल्यामुळे; त्या त्या वासनांना तो मरणोत्तर प्राप्त होतो.

विनोबांची गीताई :-

ज्ञो ज्ञो आठवुनी भाव शेंवटीं देह सोडितो।
मिळे त्या त्या भावास सदा त्यांत चि रंगला ॥ ८ - ६ ॥

तस्मात् सर्वेषु कालेषु माम् अनुस्मर युध्य च ।

मयि अर्पितमनोबुद्धिः माम् एव एष्यसि असंशयः ॥ ८ - ७ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तस्मात्	Tasmaat	therefore	हे अर्जुन ! इसलिये तुम	(हे अर्जुना !) म्हणून (तू)
सर्वेषु	SarveShu	in all	सब	सर्वांत
कालेषु	KaaleShu	in times	काल में अर्थात् निरन्तर	काळी
माम्	Maam	Me	मेरा	माझे
अनुस्मर	Anusmara	remember	स्मरण करो	स्मरण कर
युध्य	Yudhya	fight	युद्ध भी करो	युद्ध कर
च	Cha	and	और	आणि
मयि	Mayi	To Me	मुझ में	माझ्याठिकाणी
अर्पितमनोबुद्धिः	Arpita – Mano - BuddhiH	with mind and intellect fixed on Me	इस प्रकार अर्पण किये हु ए मन बुद्धि से युक्त होकर तुम	अर्पण केलेल्या अशा मन व बुद्धी यांनी युक्त होऊन
माम्	Maam	to Me	मुझ में	मला
एव	Eva	alone	ही	च
एष्यसि	Eshyasi	(you) shall come	तुम मुझ को प्राप्त हो जाओगे	तू प्राप्त करून घेशील
असंशयः	AshaMshayaH	without any doubt	निःसन्देह	निःसंदेहपणे

अन्वय :- तस्मात् सर्वेषु कालेषु मयि अर्पितमनोबुद्धिः (भव), माम् अनुस्मर, युध्य च ; (एवम्) असंशयः माम् एव एष्यसि ॥ ८-७ ॥

English translation: -

Therefore, at all times remember Me and fight. With mind and intellect set on Me, without any doubt you shall come to Me alone.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! इसलिये, तुम सब काल में अर्थात् निरन्तर, मेरा स्मरण करो और अपना कर्तव्य समझकर युद्ध भी करो । इस प्रकार, मुझ में अर्पण किये हुए मन बुद्धि से युक्त होकर, तुम निःसन्देह मुझ को ही प्राप्त हो जाओगे।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! यासाठी तू तुझे मन आणि बुद्धी माझ्या ठिकाणी अर्पण कर, माझे स्मरण कर आणि युद्ध कर; असे केल्यास तू निःसंशय मला म्हणजेच ईश्वराला पावशील.

विनोबांची गीताई :-

म्हणूनि सगळा काळ मज आठव झुंज तूं।
मन बुद्धि समर्पूनि मज निःशंक पावसी ॥ ८-७ ॥

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा न अन्य गामिना ।

परमम् पुरुषम् दिव्यम् याति पार्थ अनुचिन्तयन् ॥ ८-८ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अभ्यासयोगयुक्तेन	Abhyaasa-Yoga-Yuktena	steadfast by the practice of Yoga	परमेश्वर के ध्यान के अभ्यासरूप योग से युक्त	(परमेश्वराच्या ध्यानात) अभ्यासरूपी योगाने युक्त
चेतसा	Chetasaa	with mind	चित्त से	चित्ताने
न	Na	not	न	नाही
अन्य	Anya	any other thing	दूसरी ओर	दुसरीकडे
गामिना	Gaaminaa	moving towards	जानेवाले	जाणाऱ्या
परमम्	Paramam	supreme	परम प्रकाशस्वरूप	परम प्रकाशस्वरूप
पुरुषम्	PuruSham	the being	पुरुष को अर्थात् परमेश्वर को ही	पुरुषाला (म्हणजे परमेश्वरालाच)
दिव्यम्	Divyam	resplendent	दिव्य	दिव्य
याति	Yaati	goes	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
अनुचिन्तयन्	Anu-Chintayan	meditating	निरन्तर चिन्तन करता हुआ मनुष्य	निरंतर चिंतन करणारा मनुष्य

अन्वय :- हे पार्थ ! अभ्यासयोगयुक्तेन न अन्य गामिना चेतसा अनुचिन्तयन्, दिव्यम् परमम् पुरुषम् याति ॥ ८-८ ॥

English translation: -

O Arjuna! With the mind not wandering after anything else, made steadfast in the Yoga of constant practice, he who meditates on the Supreme, that resplendent being reaches him / the Supreme.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन! यह नियम है कि, परमेश्वर के ध्यान के अभ्यासरूप योग से युक्त, दूसरी ओर न जानेवाले एकाग्र चित्त से, निरन्तर चिन्तन - मनन और भजन करता हुआ मनुष्य; परम प्रकाशस्वरूप दिव्य पुरुष को अर्थात् परमेश्वर को ही प्राप्त होता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना! चित्त दुसरीकडे जाऊ न देता, ते अभ्यासाच्या योगाने स्थिर करून, जो त्या दिव्य पुरुषाचे निरंतर चिंतन करतो; तो त्यालाच जाऊन मिळतो.

विनोबांची गीताई :-

अभ्यासीं चित्त ज़ोडूनि योगी अन्य न लक्षुनी।
पुरुषास महा दिव्य पावे संतत चिंतुनी ॥ ८-८ ॥

कविम् पुराणम् अनुशासितारम् अणोः अणीयांसम् अनुस्मरेत् यः ।
सर्वस्य धातारम् अचिन्त्यरूपम् आदित्यवर्णम् तमसः परस्तात् ॥ ८-९ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कविम्	Kavim	the Omniscient	सर्वज्ञ	सर्वज्ञ
पुराणम्	PuraaNam	the ancient	अनादि	अनादी
अनुशासितारम्	Anu-Shaasitaaram	the Ruler	सब के नियन्ता	सर्वांचा नियंता
अणोः	ANoH	than minute	अति सूक्ष्म	अति सूक्ष्म
अणीयांसम्	ANeeyaaMsam	minuter	सूक्ष्म से भी	सूक्ष्मापेक्षा
अनुस्मरेत्	Anusmaret	remembers / meditates	स्मरण करता है	निरंतर स्मरण करील
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो (पुरुष)
सर्वस्य	Sarvasya	of all	सब के	सर्वांचे
धातारम्	Dhaataaram	supporter	धारण पोषण करने वाले	धारण पोषण करणारा
अचिन्त्यरूपम्	Achintya-Ruupam	of inconceivable form	अचिन्त्य स्वरूप	अचिंत्यस्वरूप
आदित्यवर्णम्	Aaditya-VarNam	effulgent like the sun	सूर्य से सदृश नित्य चेतन प्रकाशरूप और	सूर्याप्रमाणे नित्य चेतन प्रकाशरूप
तमसः	TamasaH	from darkness	अविद्या से	अज्ञानाच्या
परस्तात्	Parastaat	beyond	अति परे शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमेश्वर का	फार पलीकडे (शुद्ध सच्चिदानंदघन परमेश्वराचे)

अन्वय :- कविम् , पुराणम् , अनुशासितारम् , अणोः अणीयांसम् , सर्वस्य धातारम्, अचिन्त्यरूपम् , तमसः परस्तात् , आदित्यवर्णम् (विद्यमानम् पुरुषम्) यः अनुस्मरेत् ॥ ८ - ९ ॥

English translation:- He who meditates on the Omniscient, ancient, all-ruler, minuter than the minute, supporter of all, of inconceivable form, effulgent as the sun, beyond darkness.

हिन्दी अनुवाद :-

जो पुरुष , सर्वज्ञ , अनादि सब के नियन्ता , सूक्ष्म से भी अति - सूक्ष्म , सब के धारण - पोषण करने वाले , अचिन्त्य स्वरूप सूर्य से सदृश , नित्य चेतन प्रकाशरूप और अविद्या से अति परे , शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमेश्वर का , स्मरण करता है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो ज्ञानी पुरुष सर्वज्ञ , अनादि , सर्व जगाचा शास्ता , अणूपेक्षाही सूक्ष्म , सर्वांचे पोषण करणारा , अचिन्त्यस्वरूप , सूर्याप्रमाणे तेजस्वी आणि अज्ञानरूपी अंधःकाराच्या पलीकडच्या अशा भव्य - दिव्य शक्तीस्वरूपी परमात्म्याचे सतत चिंतन करतो ; तो ज्ञानी पुरुष त्याच दिव्य ईश्वराप्रत पोचतो .

विनोबांची गीताई :-

सर्वज्ञ कर्ता गुरु ज्ञो पुराण सूक्ष्माहुनी सूक्ष्म अचिंत्य - रूप ।
गिळूनि अंधार उजेडला ज्ञो तो चिंतुनीयां प्रभु सूर्य - वर्ण ॥ ८ - ९ ॥

प्रयाणकाले मनसा अचलेन भक्-त्या युक्तः योगबलेन च एव ।

भ्रुवोः मध्ये प्राणम् आवेश्य सम्यक् सः तम् परम् पुरुषम् उपैति दिव्यम् ॥ ८-१० ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रयाणकाले	PrayaaNa-Kaale	at the time of death	अन्तकाल में भी	अंतकाळी
मनसा	Manasaa	with mind	मन से	मनाने (स्मरण करीत)
अचलेन	Achalena	unmoving	निश्चल	निश्चल
भक् - त्या	Bhaktyaa	with devotion	भक्ति से	भक्तीने
युक्तः	YuktaH	united	युक्त पुरुष	युक्त असा पुरुष
योगबलेन	Yoga-Balena	by power of Yoga	योगबल से	योगाच्या सामर्थ्याने
च	Cha	and	और	नंतर
एव	Eva	only	ही	केवळ
भ्रुवोः	BhruvoH	of two eyebrows	भृकुटी के	भुवयांच्या
मध्ये	Madhye	in the middle	मध्य में	मध्यात
प्राणम्	PraaNam	Life-breath	प्राण को	प्राणाला
आवेश्य	Aaveshya	having fixed	स्थापित कर	स्थापन करून
सम्यक्	Samyak	thoroughly / perfectly	अच्छी प्रकार	योग्यप्रकारे
सः	SaH	he	वह	तो
तम्	Tam	that	उस	त्या
परम्	Param	supreme	परम	परम
पुरुषम्	PuruSham	being	पुरुष परमात्मा को	पुरुष (परमात्म्यालाच)
उपैति	Upaiti	reaches	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
दिव्यम्	Divyam	resplendent	दिव्यरूप	दिव्यरूप

अन्वय :- प्रयाणकाले अचलेन मनसा भक्त्या युक्तः योगबलेन च एव भ्रुवोः मध्ये सम्यक् प्राणम् आवेश्य, (यः अनुस्मरेत्), सः तम् दिव्यम् परम् पुरुषम् उपैति ॥ ८-१० ॥

English translation:-

At the time of death, with steady mind and devotion, united by the power of Yoga and only by fixing the life-breath perfectly in the middle of the two eyebrows he reaches the Supreme, resplendent being.

हिन्दी अनुवाद :-

वह भक्तियुक्त पुरुष, अन्तकाल में भी, योगबल से भृकुटी के मध्य में प्राण को अच्छी प्रकार स्थापित कर, फिर निश्चल मन से स्मरण करता हुआ; उस दिव्यरूप परम पुरुष परमात्मा को ही प्राप्त होता है।

मराठी भाषान्तर :-

जो मनुष्य अंतकाळी योगाच्या सामर्थ्याने व भक्तीने युक्त होऊन, मन स्थिर करून आणि भुवयांमध्ये प्राण उत्तम रीतीने ठेवून, स्मरण करतो; तो त्याच दिव्य ईश्वराप्रत जातो.

विनोबांची गीताई :-

प्रयाण-काळीं स्थिर चित्त राखे प्रेमें तसा योग बळें कसूनि।
भ्रू-संगमीं प्राण ज़डूनि ठेवी तेव्हां मिळे त्या पुरुषास दिव्य ॥ ८-१० ॥

यत् अक्षरम् वेदविदः वदन्ति विशन्ति यत् यतयः वीतरागाः ।

यत् इच्छन्तः ब्रह्मचर्यम् चरन्ति तत् ते पदम् सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ८ - ११ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	which	जिस सच्चिदानन्दघनरूप परमपद को	जे (सच्चिदानंदघनरूप परमपदाला)
अक्षरम्	Aksharam	Imperishable	अविनाशी	अविनाशी
वेदविदः	Veda-VidaH	Knowers of the Vedas	वेद के जाननेवाले विद्वान्	वेद जाणणारे विद्वान
वदन्ति	Vadanti	they call	कहते हैं	म्हणतात
विशन्ति	Vishanti	(they) enter	प्रवेश करते हैं	प्रवेश करतात
यत्	Yat	which	जिस में	जे
यतयः	YatataH	ascetics	प्रयत्नशील संन्यासी महात्माजन	(प्रयत्नशील) संन्यासी
वीतरागाः	Veeta-RaagaaH	freed from passions	आसक्तिरहित	आसक्तिरहित
यत्	Yat	which	जिस परमपद को	ज्या (परमपदाची)
इच्छन्तः	IchchhantaH	desiring	चाहनेवाले ब्रह्मचारी लोग	इच्छा करणारे
ब्रह्मचर्यम्	Brahma-charyam	celibacy	ब्रह्मचर्य का	ब्रह्मचर्याचे
चरन्ति	Charanti	(they) perform	आचरण करते हैं	आचरण करतात
तत्	Tat	that	उस	ते
ते	Te	for you	तुम्हारे लिये	तुझ्यासाठी
पदम्	Padam	goal	परमपद को	परम पद (कसे मिळते)
सङ्ग्रहेण	SangraheNa	in brief	संक्षेप से	संक्षेपाने
प्रवक्ष्ये	Pravakshye	(I) will declare	मैं कहूँगा	मी सांगेन

अन्वय :- वेदविदः यत् अक्षरम् वदन्ति, वीतरागाः यतयः यत् विशन्ति, (ब्रह्मचारिणः) यत् इच्छन्तः ब्रह्मचर्यम् चरन्ति, तत् पदम् ते सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ८-११ ॥

English translation:-

That which the knowers of Veda call the Imperishable, that which ascetics freed from passion enter, that desiring which they lead a life of celibacy that I shall declare to you in brief.

हिन्दी अनुवाद :-

वेद के जाननेवाले विद्वान् जिस सच्चिदानन्दघनरूप परमपद को अविनाशी कहते हैं, आसक्तिरहित प्रयत्नशील संन्यासी महात्माजन, जिस में प्रवेश करते हैं और जिस परमपद को चाहनेवाले ब्रह्मचारी लोग, ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं; उस परमपद को, मैं तुम्हारे लिये संक्षेप से कहूँगा।

मराठी भाषान्तर :-

वेदवेत्ते ज्याला अविनाशी म्हणतात, विरक्त झालेले संन्यासी ज्याच्या ठिकाणी प्रवेश करतात, ब्रह्मचारी ज्याच्या प्राप्तीच्या इच्छेने ब्रह्मचर्य व्रत पाळतात; त्या स्थानाचे वर्णन मी तुला संक्षेपाने सांगेन.

विनोबांची गीताई :-

जें घोकिती अक्षर वेद-वेत्ते विरक्त यत्नें मिळती ज़यास।
ज़ें ब्रह्मचर्यें पद इच्छिताती तें सांगतों मी तुज तत्त्व-सार ॥ ८-११ ॥

सर्व द्वाराणि संयम्य मनः हृदि निरुध्य च ।

मूर्ध्नि आधाय आत्मनः प्राणम् आस्थितः योगधारणाम् ॥ ८ - १२ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्व	Sarva	all	सब इन्द्रियों के	सर्व (इंद्रियांच्या)
द्वाराणि	DvaaraaNi	doors / gates	द्वारों को	द्वारांना
संयम्य	Sanyamya	having controlled	रोककर	रोखून
मनः	ManaH	mind	मन को	मनाला
हृदि	Hrudi	in the heart	हृदेश में	हृदयामध्ये
निरुध्य	Nirudhya	having confined	स्थिर कर फिर उस जीते हु ए मन के द्वारा	रोखून
च	Cha	and	तथा	नंतर
मूर्ध्नि	Muudhirna	in the head	मस्तक में	मस्तकात
आधाय	Aadhaaya	having placed	स्थापित कर	स्थापन करून
आत्मनः	AatmanaH	of the self	परमात्म - सम्बन्धी	परमात्म्यासंबंधी
प्राणम्	PraaNam	breath	प्राण को	प्राणाला
आस्थितः	AasthitaH	established (in)	स्थित होकर	स्थित होऊन
योगधारणाम्	Yoga-DhaaraNaam	practice of concentration	योग धारणा में	योगधारणेमध्ये

अन्वय :- सर्व - द्वाराणि संयम्य , मनः च हृदि निरुध्य , मूर्ध्नि आत्मनः प्राणम् आधाय , योगधारणाम् आस्थितः ॥ ८ - १२ ॥

English translation: -

Having controlled all the gates (sensory organs), having confined the mind in the heart and having fixed his life-breath in the head, established in yogic concentration....

हिन्दी अनुवाद :-

जो साधक , सब इन्द्रियों के द्वारों को रोककर याने सब इन्द्रियों को वश में लेकर , तथा मन को हृद्देश में अर्थात् परमात्मा में स्थिर कर , फिर उस जीते हुए मन के द्वारा , प्राण को मस्तक में स्थापित कर , परमात्मसम्बन्धी योग धारणा में स्थित होकर ...

मराठी भाषान्तर :-

सर्व इंद्रियांच्या सर्व द्वारांचे संयमन करून , मनाला हृदयांतच कोंडून , मस्तकात आपला प्राण ठेवून ; योगाच्या धारणावस्थेत साधकाने स्थिर होऊन .....

विनोबांची गीताई :-

लावूनि सगळीं द्वारें कोंडूनि मन अंतरीं ।
मस्तकीं प्राण राखूनि चढला धारणेवरी ॥ ८ - १२ ॥

ॐ इति एक अक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन् ।

यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम् ॥ ८ - १३ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ॐ	Om	Om	ॐ	ॐ
इति	Iti	thus	इस	अशा
एक	Eka	mono / one	एक	एक
अक्षरम्	Aksharam	syllabled	अक्षररूप	अक्षर
ब्रह्म	Brahma	Brahman	ब्रह्म को	ब्रह्माचा
व्याहरन्	Vyaaharan	uttering	उच्चारण करता हु आ और उस के अर्थस्वरूप	उच्चार करीत (आणि त्याचे अर्थस्वरूप अशा)
माम्	Maam	Me	मुझ निर्गुण ब्रह्म का	मज (निर्गुण ब्रह्माचे)
अनुस्मरन्	Anu-Smaran	remembering	चिन्तन करता हु आ	चिंतन करीत
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो (पुरुष)
प्रयाति	Prayaati	goes forth / departs	जाता है	जातो
त्यजन्	Tyajan	leaving	त्याग कर	त्याग करून
देहम्	Deham	the body	शरीर को	देहाचा
सः	SaH	he	वह पुरुष	तो (पुरुष)
याति	Yaati	goes	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
परमाम्	Paramaam	supreme	परम	परम
गतिम्	Gatim	goal	गति को	गती

अन्वय :-

ॐ इति एक अक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन् , यः देहम् त्यजन् प्रयाति , सः परमाम् गतिम् याति ॥ ८ - १३ ॥

English translation: -

Reciting Brahman, the one-syllabled Om, remembering Me, he who departs, leaving the body, attains the Supreme Goal.

हिन्दी अनुवाद :-

जो पुरुष ॐ इस एक अक्षररूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उस के अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है ; वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ॐ या एकाक्षर ब्रह्माचा उच्चार करीत व माझे स्मरण करीत जो देह सोडून जातो ; त्याला परम श्रेष्ठ गती प्राप्त होते .

विनोबांची गीताई :-

मुखें ॐ - ब्रह्म उच्चारी अंतरीं मज आठवी ।
ह्यापरी देह ठेवूनि जाय थोर गतीस तो ॥ ८ - १३ ॥

अनन्यचेताः सततम् यः माम् स्मरति नित्यशः ।

तस्य अहम् सुलभः पार्थ नित्य युक्तस्य योगिनः ॥ ८ - १४ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अनन्यचेताः	Ananya-ChetaaH	with unswerving mind	मुझ में अनन्यचित्त होकर	(माझ्या ठिकाणी) अनन्यचित्त होऊन
सततम्	Satatam	constantly	निरन्तर	निरंतर
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो (पुरुष)
माम्	Maam	Me	मुझ पुरुषोत्तम को	मज (पुरुषोत्तमाचे)
स्मरति	Smarati	remembers	स्मरण करता है	स्मरण करतो
नित्यशः	NityashaH	continuously	सदा ही	सदा
तस्य	Tasya	of him	उस	त्या
अहम्	Aham	I	मैं	मी
सुलभः	SulabhaH	easily attainable	सुलभ हूँ अर्थात् उसे सहज ही प्राप्त हो जाता हूँ	सुलभ आहे (मी त्याला सहज प्राप्त होतो)
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
नित्य	Nitya	ever	नित्य निरन्तर	नित्य निरंतर
युक्तस्य	Yuktasya	steadfast	मुझ में युक्त हुए	(माझ्यामध्ये) युक्त असणाऱ्या
योगिनः	YoginaH	of Yogi	योगी के लिये	योग्यासाठी

अन्वय :- हे पार्थ ! यः नित्यशः अनन्यचेताः (सन्) माम् सततम् स्मरति, तस्य नित्य - युक्तस्य योगिनः अहम् सुलभः (अस्मि) ॥ ८ - १४ ॥

English translation: -

O Partha, I am easily attainable by that ever-steadfast Yogi, who constantly remembers Me daily and thinks of Me without any other thoughts.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जो पुरुष, मुझ में अनन्यचित्त होकर, सदा ही निरन्तर मुझ पुरुषोत्तम को स्मरण करता है; उस नित्य निरन्तर मुझ में युक्त हुए योगी के लिये, मैं सुलभ हूँ अर्थात् उसे सहज ही प्राप्त हो जाता हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ईश्वराशिवाय दुसरे काहीही श्रेष्ठ नाही अशा भावनेने माझे सदैव स्मरण करणाऱ्या नित्ययुक्त योग्याला मी सहज प्राप्त होतो.

विनोबांची गीताई :-

अनन्य चित्त ज़ो नित्य स्मरे मज़ निरंतर।
सदा मिसळला योगी तो सुखें मज़ पावतो ॥ ८ - १४ ॥

माम् उपेत्य पुनः जन्म दुःखालयम् अशाश्वतम् ।

न आप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिम् परमाम् गताः ॥ ८ - १५ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
माम्	Maam	to Me	मुझ को	मला
उपेत्य	Upetya	Having attained	प्राप्त होकर	प्राप्त करून घेतल्यावर
पुनः	PunaH	again	वापस	पुनः
जन्म	Janma	birth	जन्म को	जन्म
दुःखालयम्	DuHkha-Aalayam	abode of pain	दुःखों के घर एवं	दुःखांचे घर
अशाश्वतम्	Ashashvatam	non-eternal	क्षणभङ्गुर	क्षणभंगुर
न	Na	not	नहीं	नाहीत
आप्नुवन्ति	Aapnuvanti	get / attain	प्राप्त होते हैं	प्राप्त करून घेतात
महात्मानः	MahaatmanaH	the great souls	महात्माजन	महान पुरुष
संसिद्धिम्	Sansiddhim	to perfection	सिद्धि को	सिद्धीला
परमाम्	Paramaam	highest	परम	श्रेष्ठ
गताः	GataaH	having reached	प्राप्त	प्राप्त करून घेतलेले

अन्वय :-

परमाम् संसिद्धिम् गताः महात्मानः माम् उपेत्य, पुनः दुःखालयम् अशाश्वतम् जन्म न आप्नुवन्ति ॥ ८ - १५ ॥

English translation: -

Having come to Me, the great souls are no more subject to rebirth, which is transitory and abode of pain; for they have reached the highest perfection.

हिन्दी अनुवाद :-

परम सिद्धि को प्राप्त महात्माजन, मुझ को प्राप्त होकर, दुःखों के घर एवं क्षणभङ्गुर, पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

मला येऊन मिळाल्यावर, परमसिद्धी प्राप्त झालेल्या या महात्म्यांना दुःखाचे आगर व अशाश्वत असा पुनर्जन्म प्राप्त होत नाही.

विनोबांची गीताई :-

पावले मोक्ष सिद्धीस महात्मे मज भेटुनी।
दुःखाचें घर तो जन्म न घेती चि अशाश्वत ॥ ८ - १५ ॥

आ - ब्रह्मभुवनात् लोकाः पुनः - आवर्तिनः अर्जुन ।

माम् - उपेत्य तु कौन्तेय पुनः - जन्म न विद्यते ॥ ८ - १६ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
आ - ब्रह्मभुवनात्	Aa - Brahma - Bhuvanaat	up to the world of Brahma	ब्रह्मलोक तक	ब्रह्मलोकापर्यंत
लोकाः	LokaaH	worlds	सब लोक	सर्व लोक
पुनः - आवर्तिनः	PunaH - AavartinaH	subject to return	पुनरावर्ती हैं	पुनरावर्ती (आहेत)
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
माम् - उपेत्य	Maam - Upetya	Me – having attained	मुझ को प्राप्त होकर	मला प्राप्त करून घेतल्यावर
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे कुन्तीपुत्र	हे कुन्तीपुत्रा अर्जुना !
पुनः - जन्म	PunaH - Janma	rebirth	पुनर्जन्म	पुनर्जन्म
न	Na	not	नहीं	नाही
विद्यते	Vidyate	is / possible	होता है	होतो

अन्वय :-

हे अर्जुन ! आ - ब्रह्मभुवनात् (सर्वे) लोकाः पुनः - आवर्तिनः (सन्ति) ; हे कौन्तेय ! माम् - उपेत्य तु पुनः - जन्म न विद्यते ॥ ८ - १६ ॥

English translation: -

O Arjuna! All worlds including that of Brahma are subject to return, but reaching on Me, O son of Kunti, there is no rebirth.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! ब्रह्मलोक तक सब लोक पुनरावर्ती हैं ; अर्थात् जिन सात लोकों को प्राप्त होकर पृथ्वीलोक में अर्थात् इस क्षणभङ्गुर संसार में वापस आना पडता हैं। परन्तु, हे कुन्तीपुत्र ! मुझ को प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ब्रह्मलोकांपासून जितके लोक (सप्त लोक) आहेत तेथून पुनर्जन्म घ्यावा लागतो . हे कुंतीनंदना ! माझ्या म्हणजे ईश्वराजवळ आल्यानंतर पुन्हा जन्म घ्यावा लागत नाही .

विनोबांची गीताई :-

ब्रह्मादि लोक ते सारे माघारे घालिती पुन्हां ।
माझी भेट घडे तेव्हां जन्मणें मग खुंटलें ॥ ८ - १६ ॥

सहस्र - युग - पर्यन्तम् अहः यत् ब्रह्मणः विदुः ।

रात्रिम् युग - सहस्र - अन्ताम् ते अहः - रात्र - विदः जनाः ॥ ८ - १७ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सहस्र - युग - पर्यन्तम्	Sahasra – Yuga - Paryantam	ending in a thousand ages (Yugas)	एक कल्प अर्थात् एक हजार युग तक (४.३२ अरब वर्ष की अवधिवाला)	एक हजार युगापर्यन्त
अहः	AhaH	day	एक दिन है उसको	दिवस
यत्	Yat	which	जो	जो
ब्रह्मणः	BrahmaNaH	of God Brahma	ब्रह्मदेव का	ब्रह्मदेवाचा
विदुः	ViduH	know	तत्त्व से जानते हैं	(जे पुरुष तत्त्वतः) जाणणात
रात्रिम् युग - सहस्र - अन्ताम्	Raatrim – Yuga – Sahasra - Antaam	night ending in a thousand ages (Yugas)	और रात्रि को भी एक हजार युग तक की अवधीवाली	एक हजार युगापर्यन्तची रात्र
ते	Te	they	वे	ते
अहः - रात्र - विदः	AhaH – Raatra – VidaH	knowers of day and night	काल के तत्त्व को जाननेवाले हैं	कालाचे तत्त्व जाणणारे
जनाः	JanaaH	people	योगीजन	योगी लोक

अन्वय :- यत् ते अहः - रात्र - विदः जनाः सहस्र - युग - पर्यन्तम् ब्रह्मणः अहः (ताम्) युग - सहस्र - अन्ताम् रात्रिम् (च) विदुः ॥ ८ - १७ ॥

English translation:-

Those who know that the day of God Brahma lasts a thousand Yugas (ages) and the night lasts a thousand Yugas (ages); they are the (real) knowers of day and night.

हिन्दी अनुवाद :-

जो लोग , यह जानते हैं कि , ब्रह्मदेव के एक दिन की अवधि (एक कल्प अर्थात् ४.३२ अरब वर्ष) एक हजार युग है तथा उसकी एक रात की अवधि भी एक हजार युग है ; वे दिन और रात को तत्त्व से जाननेवाले हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हजारयुगांचा काळ म्हणजे ब्रह्मदेवाचा एक दिवस असतो आणि तितकाच काळ म्हणजे त्याची एक रात्र होते , असे जे जाणतात ; तेच अहोरात्रवेत्ते म्हणजे , काळाचे तत्त्व जाणणारे होत .

विनोबांची गीताई :-

होतसे ब्रह्म देवाचा सहस्र युग तों दिन ।
तेवढी चि तशी रात्र कालोपासक ज़ाणती ॥ ८ - १७ ॥

अव्यक्तात् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्ति अहरागमे ।

रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्र एव अव्यक्त सञ्ज्ञके ॥ ८ - १८ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अव्यक्तात्	Avyaktaat	from the unmanifested	अव्यक्त से अर्थात् ब्रह्मदेव के सूक्ष्म शरीर से	अव्यक्तापासून (म्हणजे ब्रह्मदेवाच्या सूक्ष्म शरीरापासून)
व्यक्तयः	VyaktayaH	the manifested	चराचर भूतगण	चराचर
सर्वाः	SarvaaH	All	सम्पूर्ण	संपूर्ण
प्रभवन्ति	Prabhavanti	proceed	उत्पन्न होते हैं	उत्पन्न होतात
अहरागमे	Aharaagame	at the coming of day	ब्रह्मदेव के दिन के प्रवेशकाल में	(ब्रह्मदेवाच्या) दिवसाच्या प्रवेशकाळी
रात्र्यागमे	Raatryaagame	at the coming of night	और ब्रह्मदेव की रात्रि के प्रवेशकाल में	(आणि ब्रह्मदेवाच्या) रात्रीच्या प्रवेशकालात
प्रलीयन्ते	Praleeyante	dissolve	लीन हो जाते हैं	लीन होऊन जातात
तत्र	Tatra	there	उस	त्या
एव	Eva	only	ही	केवळ
अव्यक्त	Avyakta	the unmanifested	अव्यक्त	व्यक्त नसणाऱ्या
सञ्ज्ञके	Sandnyake	in that which is called	नामक (ब्रह्मदेव के सूक्ष्म में)	नावाच्या (ब्रह्मदेवाच्या सूक्ष्म शरीरामध्ये)

अन्वय :- अहरागमे सर्वाः व्यक्तयः अव्यक्तात् प्रभवन्ति , (पुनः) रात्र्यागमे तत्र अव्यक्त - सञ्ज्ञके एव प्रलीयन्ते ॥ ८ - १८ ॥

English translation:-

At the coming of day all manifest beings proceed from the unmanifested, and at the coming of night they merge again in the same which is called the unmanifested.

हिन्दी अनुवाद :-

सम्पूर्ण चराचर भूतगण , ब्रह्मदेव के दिन के प्रवेशकाल में , अव्यक्त से अर्थात् ब्रह्मदेव के सूक्ष्म शरीर से , उत्पन्न होते हैं और ब्रह्मदेव की रात्रि के प्रवेशकाल में , उस अव्यक्त नामक ब्रह्मदेव के सूक्ष्म में ही लीन हो जाते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हा ब्रह्मदेवाचा दिवस उगवला म्हणजे अव्यक्त प्रकृतीपासून सर्व दृश्य पदार्थ उत्पन्न होतात आणि ब्रह्मदेवाची रात्र सुरू झाली म्हणजे अव्यक्तात ते विलीन होतात .

विनोबांची गीताई :-

अव्यक्तापासुनी होती भूतें व्यक्त दिनोदयीं ।
रात्र होतां लया ज़ाती सगळीं मग त्यांत चि ॥ ८ - १८ ॥

भूतग्रामः सः एव अयम् भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।

रात्र्यागमे अवशः पार्थ प्रभवति अहरागमे ॥ ८ - १९ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
भूतग्रामः	Bhuuta-GraamaH	multitude of beings	भूतसमुदाय	प्राणिसमुदाय
सः	SaH	he	वह	तो
एव	Eva	only	ही	च
अयम्	Ayam	this	यह	हा
भूत्वा - भूत्वा	Bhuutvaa - Bhuutvaa	being born again And again	उत्पन्न हो होकर	वारंवार उत्पन्न होऊन
प्रलीयते	Praleeyante	dissolve / merge	लीन होता है	लीन होऊन जातो
रात्रि - आगमे	Raatri - Aagame	at the coming of night	रात्रि के प्रवेशकाल में	रात्रीच्या प्रवेशकाळी
अवशः	AvashaH	helpless	प्रकृति के वश में हुआ	प्रकृतीला वश होऊन
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
प्रभवति	Prabhavati	comes forth / stems forth	फिर उत्पन्न होता है	पुन्हा उत्पन्न होतो
अहरागमे	Aharaagame	at the coming of day	दिन के प्रवेशकाल में	दिवसाच्या प्रवेशकाळी

अन्वय :- हे पार्थ ! सः एव अयम् भूतग्रामः ; अवशः (सन्) भूत्वा भूत्वा रात्र्यागमे प्रलीयते , (पुनः) अहरागमे प्रभवति ॥ ८ - १९ ॥

English translation: -

O Partha! This multitude of beings, being born again and again, merge helplessly at the coming of night, and re-manifest / stream forth themselves at the approach of day.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! वही , यह भूतसमुदाय उत्पन्न हो - होकर , प्रकृति के वश में हुआ , रात्रि के प्रवेशकाल में लीन होता है ; और दिन के प्रवेशकाल में , पुनः निर्माण होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! तोच परतंत्र असा सर्व प्राण्यांचा समुदाय , पुन्हा पुन्हा उत्पन्न होऊन रात्रीत लय पावतो आणि दिवस उगवला असता , पुन्हा उत्पन्न होतो .

विनोबांची गीताई :-

तीं चि तीं चि पुन्हां भूतें त्यांचें कांहीं न चालतां ।
दिनांती मरती सारीं उदयीं जन्म पावती ॥ ८ - १९ ॥

परः तस्मात् तु भावः अन्यः अव्यक्तः अव्यक्तात् सनातनः ।

यः सः सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥ ८ - २० ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
परः	ParaH	higher	परे	श्रेष्ठ
तस्मात्	Tasmaat	than that	उस	त्या
तु	Tu	but	परंतु	परंतु
भावः	BhaavaH	being / existence	भाव है	भाव
अन्यः	AnyaH	another	दूसरा अर्थात् विलक्षण	दुसरा (वेगळा)
अव्यक्तः	AvyaktaH	the unmanifested	अव्यक्त से भी अति	अव्यक्त
अव्यक्तात्	Avyaktaat	than the unmanifested	अव्यक्त	अव्यक्तापेक्षा
सनातनः	SanaatanaH	eternal	सनातन	सनातन
यः	YaH	who	जो	जो
सः	SaH	he	वह परम दिव्य पुरुष	तो (परम दिव्य पुरुष)
सर्वेषु	SarveShu	in all	सब	सर्व
भूतेषु	BhuuteShu	in beings	भूतों के	प्राणिमात्रांमध्ये
नश्यत्सु	Nashyatsu	in being destroyed	नष्ट होनेपर भी	नष्ट झाल्यावर (सुद्धा)
न	Na	not	नहीं	नाही
विनश्यति	Vinashyati	is destroyed	नष्ट होता है	नष्ट होतो

अन्वय :- यः तु सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति, सः, तस्मात् अव्यक्तात् अन्यः, अव्यक्तः सनातनः परः भावः (अस्ति) ॥ ८-२० ॥

English translation: -

But beyond (higher than) this un-manifested, there exists yet another Unmanifested Eternal Being; which does not perish even when all beings ultimately perish.

हिन्दी अनुवाद :-

परंतु इस क्षर प्रकृति से परे, एक दूसरी अविनाशी आदि प्रकृति है; जो सब भूतों के नष्ट होने पर भी, नष्ट नहीं होती है।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु त्या अव्यक्तापासून निराळे, अदृश्य आणि सनातन असे दुसरे एक जे अस्तित्व आहे ; ते सर्व प्राणिमात्रांचा नाश झाला असतानाही नाश पावत नाही. त्या अस्तित्वालाच परमात्मा म्हणतात.

विनोबांची गीताई :-

अव्यक्त दुसरें तत्त्व त्या अव्यक्तापलीकडे।
नाशतां सगळीं भूतें न नाशे ज़ें सनातन ॥ ८-२० ॥

अव्यक्तः अक्षरः इति उक्तः तम् आहुः परमाम् गतिम् ।

यम् प्राप्य न निवर्तन्ते तत् धाम परमम् मम ॥ ८-२१ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अव्यक्तः	AvyaktaH	the unmanifested	अव्यक्त	अव्यक्त
अक्षरः	AksharaH	imperishable	अक्षर	अक्षर
इति	Iti	thus	इस नाम से	या नावाने
उक्तः	UktaH	called	कहा गया है	सांगितला गेला आहे
तम्	Tam	that	उसी अक्षर नामक अव्यक्त भाव को	त्याला (अक्षर नावाच्या अव्यक्त भावाला)
आहुः	AahuH	(they) say	कहते हैं	म्हणतात
परमाम्	Paramaam	the highest / the ultimate	परम	श्रेष्ठ
गतिम्	Gatim	goal	गति	गती
यम्	Yam	which	तथा जिस सनातन अव्यक्तभाव को	ज्याला (सनातन अव्यक्त भावाला)
प्राप्य	Praapya	having reached	प्राप्त होकर मनुष्य	प्राप्त करून घेतल्यावर
न	Na	not	नहीं	नाहीत
निवर्तन्ते	Nivartante	return	वापस आते	परत येतात
तत्	Tat	that	वह	ते
धाम	Dhaam	abode	धाम है	निवासस्थान
परमम्	Paramam	supreme	परम	श्रेष्ठ
मम	Mama	My	मेरा	माझे

अन्वय :- (यः) अव्यक्तः (भावः) अक्षरः इति उक्तः , तम् परमाम् गतिम् आहुः , (ज्ञानिनः) यम् प्राप्य न निवर्तन्ते , तत् धाम परमम् मम (अस्ति) ॥ ८ - २१ ॥

English translation: -

The Unmanifested is called the Imperishable. It is said to be the Supreme Goal. Those who attain it do not return (to the cycle of life and death in this world). That is My Supreme Abode.

हिन्दी अनुवाद :-

जिसे अव्यक्त अक्षर इस नाम से कहा गया है , उसी अक्षर नामक अव्यक्त भाव को परमगति कहते हैं , तथा जिस सनातन अव्यक्तभाव को प्राप्त होकर , मनुष्य जन्म और मृत्यु के अर्थात् आवागमन के बन्धनों से मुक्त हो जाता है ; वही मेरा परम धाम है ।

मराठी भाषान्तर :-

या अव्यक्त भावाला म्हणजे परमात्म्याला , अविनाशी तथा अक्षर असे म्हणतात . ज्या पदाला जाऊन पोचले असता , ज्ञानी पृथ्वीतलावर परत येत नाही ; तेच माझे परम धाम आहे .

विनोबांची गीताई :-

त्यास अक्षर हें नाम ती चि शेंवटची गति ।
माझें परम तें धाम ज़ेथूनि परते चि ना ॥ ८ - २१ ॥

पुरुषः सः परः पार्थ भक्-त्या लभ्यः तु अनन्यया ।

यस्य अन्तःस्थानि भूतानि येन सर्वम् इदम् ततम् ॥ ८-२२ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
पुरुषः	PuruShaH	Being	पुरुष	पुरुष
सः	SaH	that	वह सनातन अव्यक्त	तो (सनातन अव्यक्त)
परः	ParaH	Supreme	परम	श्रेष्ठ
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
भक्-त्या	Bhaktyaa	by devotion	भक्ति से ही	भक्तीनेच
लभ्यः	LabhyaH	(is) attainable	प्राप्त होने योग्य है	मिळवण्यास योग्य
तु	Tu	but / indeed / verily	तो	केवळ
अनन्यया	Ananyayaa	unswerving / without (focusing on) any another object	अनन्य	एकनिष्ठ
यस्य	Yasya	of whom	जिस परमात्मा के	ज्या (परमात्म्याच्या)
अन्तःस्थानि	AntaH-Sthaani	dwelling within	अन्तर्गत	अंतर्गत
भूतानि	Bhuutaani	beings	सर्वभूत हैं	सर्व प्राणिमात्र
येन	Yena	by whom	और जिस सच्चिदानन्दघन परमात्मा से	ज्या (सच्चिदानंदघन परमात्म्याने)
सर्वम्	Sarvam	all	समस्त जगत्	सर्व जग
इदम्	Idam	this	यह	हे
ततम्	Tatam	pervaded	परिपूर्ण है	व्याप्त (आहे)

अन्वय :- हे पार्थ! भूतानि यस्य अन्तःस्थानि (सन्ति), येन सर्वम् इदम् ततम्, सः तु परः पुरुषः अनन्यया भक्-त्या लभ्यः (अस्ति) ॥ ८-२२ ॥

English translation: -

O Arjuna! That Supreme Being in whom all beings dwell, by whom all this is pervaded is indeed attainable by unswerving devotion.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन! जिस परमात्मा के अन्तर्गत सर्वभूत हैं और जिस सच्चिदानन्दघन परमात्मा से, यह समस्त जगत् परिपूर्ण है; वह सनातन अव्यक्त परम पुरुष तो, अनन्य भक्ति से ही, प्राप्त होने योग्य है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना! ज्याच्या ठायी सर्व प्राणिमात्र आहेत आणि ज्याने हे सर्व जग व्यापले आहे; तो ईश्वर अनन्य भक्तीनेच प्राप्त होण्याजोगा आहे.

विनोबांची गीताई :-

त्यास अक्षर हें नाम ती चि शेंवटची गति।
माझें परम तें धाम ज़ेथूनि परते चि ना ॥ ८-२२ ॥

यत्र काले तु अनावृत्तिम् आवृत्तिम् च एव योगिनः ।

प्रयाताः यान्ति तम् कालम् वक्ष्यामि भरत - ऋषभ ॥ ८ - २३ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्र	Yatra	where	जिस	येथे (ज्या)
काले	Kaale	in time	काल में	काळी / समयी
तु	Tu	indeed / verily	तो	तर / परंतु
अनावृत्तिम्	Anaavruttim	non-return	वापस न लौटनेवाली गति को	परत न येणारी गती
च	Cha	and	और जिस काल में गये हुए	आणि
आवृत्तिम्	Aavruttim	return	वापस लौटनेवाली गति को	परत येणारी गती
एव	Eva	also	ही	च
योगिनः	YoginaH	Yogis	योगीजन	योगी लोक
प्रयाताः	PrayaataaH	departing	शरीर त्याग कर गये हुए	(शरीराचा त्याग करून) गेलेले
यान्ति	Yaanti	go to	प्राप्त होते हैं	प्राप्त करून घेतात
तम्	Tam	that	उस	त्या
कालम्	Kaalam	time	काल को अर्थात् दोनों मार्गों को	काळ (त्या दोन मार्गांच्या बाबतीत)
वक्ष्यामि	Vakshyaami	(I) will tell	मैं अब तुम्हें बताऊँगा	मी सांगतो
भरत - ऋषभ	Bharata - Rhishabha	O best (bull) among the Bharatas!	हे भरत कुलोत्तम अर्जुन !	हे भरत कुलोत्तमा अर्जुना !

अन्वय :- हे भरत - ऋषभ ! यत्र काले तु प्रयाताः योगिनः अनावृत्तिम् आवृत्तिम् च एव यान्ति, तम् कालम् वक्ष्यामि ॥ ८ - २३ ॥

English translation: -

O best (bull) among the Bharatas! Now I shall tell you the time in which Yogis depart never to return and also the time they do return (to the cycle of life and death in this mortal world).

हिन्दी अनुवाद :-

हे भरत कुलोत्तम अर्जुन ! जिस समय में, शरीर त्याग कर गये हुए योगीजन, तो वापस न लौटनेवाली गति को और जिस समय में, गये हुए साधक वापस लौटनेवाली गति को ही प्राप्त होते हैं ; उस काल को अर्थात् दोनों मार्गों को मैं अब तुम्हें बताऊँगा ।

मराठी भाषान्तर :-

हे भरतश्रेष्ठा ! अर्जुना कोणत्या काळी परलोकी प्रयाण केले असता, योगी परत जन्मास येत नाहीत आणि कोणत्या काळी परलोकी प्रयाण केले असता, ते परत जन्मास येतात ; तो काळ मी तुला सांगतो .

विनोबांची गीताई :-

कोण्या काळीं कसा देह ठेवुनी येथ साधक ।
संसारीं पडतो किंवा पावतो सिद्धि ऐक तें ॥ ८ - २३ ॥

अग्निः ज्योतिः अहः शुक्लः षट् - मासाः उत्तरायणम् ।

तत्र प्रयाताः गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदः जनाः ॥ ८ - २४ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अग्निः	AgniH	fire	अग्नि	अग्नी
ज्योतिः	JyotiH	light	ज्योतिर्मय	प्रकाश
अहः	AhaH	day	दिन	दिवस
शुक्लः	ShuklaH	the bright fortnight	शुक्लपक्ष	शुक्लपक्ष
षट्	Shat	six	छः	सहा
मासाः	MaasaaH	months	महिनों का समय	महिने
उत्तरायणम्	UttaraayaNam	the northern trajectory of the sun	सूर्य के उत्तरायण के	उत्तरायण
तत्र	Tatra	there	उस मार्ग में	त्या (मार्गावर)
प्रयाताः	PrayaataaH	departed	मर गये हुए	(मेल्यावर) गेलेले
गच्छन्ति	Gachchhanti	go	उपर्युक्त क्रम से प्राप्त होते हैं	प्राप्त करून घेतात
ब्रह्म	Brahma	to Brahman	ब्रह्म को	ब्रह्म
ब्रह्मविदः	Brahma-VidaH	the knowers of Brahman	ब्रह्मज्ञानी	ब्रह्मवेत्ते
जनाः	JanaaH	people	योगीजन	योगीजन

अन्वय :- अग्निः , ज्योतिः , अहः , शुक्लः (पक्षः) , षट् - मासाः , उत्तरायणम् , तत्र (काले) प्रयाताः , ब्रह्मविदः जनाः ब्रह्म गच्छन्ति ॥ ८ - २४ ॥

English translation: -

Fire, light, day-time, the bright fortnight of the moon and the six months of the northern (hemisphere) trajectory of the sun – there (during these circumstances) the departing knowers of Brahman (those who never expect favourable outcome of their actions) go to the Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

ब्रह्म को तत्त्व से पूर्णतः जाननेवाले साधकजन , जो अग्नि - प्रकाश - दिन - शुक्लपक्ष और सूर्य के उत्तरायण के छः महिनोंवाले तथा ज्ञानरूपी प्रकाश के मार्ग द्वारा जाते हैं ; वे ब्रह्म को ही प्राप्त होते हैं तथा पुनः जन्ममृत्यु के चक्र में फँसकर , इस संसार में वापस नहीं आते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

अग्नी , प्रकाश , दिवस , शुद्धपक्ष , उत्तरायणाचे सहा महिने अशा प्रकाशमय काळी मृत्यू पावलेले ब्रह्मवेत्ते लोक ब्रह्मास प्राप्त होतात व त्यांना पुनर्जन्म नसतो .

विनोबांची गीताई :-

अग्नीनें दिन शुक्लार्ध उत्तरायण ज़ोडुनी ।

ज़ाय तो गांठतो ब्रह्म शेंवटीं ब्रह्म ज़ाणुनी ॥ ८ - २४ ॥

धूमः रात्रिः तथा कृष्णः षट् मासाः दक्षिणायनम् ।

तत्र चान्द्रमसम् ज्योतिः योगी प्राप्य निवर्तते ॥ ८ - २५ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
धूमः	DhuumaH	smoke	धुआ	धूर
रात्रिः	RaatriH	night	रात्रि	रात्र
तथा	Tathaa	also	तथा	तसेच
कृष्णः	KriShNaH	the dark fortnight	कृष्णपक्ष	कृष्णपक्ष
षट्	Shat	six	छः	सहा
मासाः	MaasaaH	months	महीनों का	महिने
दक्षिणायनम्	DakshiNaa-yanam	the southern trajectory of the sun	सूर्य के दक्षिणायन के समय	दक्षिणायन
तत्र	Tatra	there	उस मार्ग में मर गया हुआ	त्या (मार्गावर मेल्यावर गेलेला)
चान्द्रमसम्	Chandra-masam	lunar	चन्द्रमा की	चंद्राच्या
ज्योतिः	JyotiH	light	ज्योति को	प्रकाश
योगी	Yogee	Yogi	सकाम कर्म करनेवाला योगी उपर्युक्त क्रम से	(सकाम कर्मे करणारा) योगी
प्राप्य	Praapya	having attained	प्राप्त हो कर स्वर्ग में अपने शुभ कर्मों का फल भोगकर	प्राप्त होऊन (स्वर्गामध्ये स्वतःच्या शुभ कर्मांचे फळ भोगून झाल्यावर)
निवर्तते	Nivartate	returns	इस जन्ममृत्युस्वरूप संसार में वापस आता है।	पुन्हा मनुष्यजन्माला येतो

अन्वय :- धूमः, रात्रिः, तथा कृष्णः (पक्षः), षट् मासाः, दक्षिणायनम्, तत्र (काले प्रयातः) योगी चान्द्रमासम् ज्योतिः प्राप्य निवर्तते ॥ ८-२५ ॥

English translation: -

Smoke, night-time, the dark fortnight of moon and the six months of the trajectory of the Sun – there (under these circumstances) the Yogi (who always expects favourable outcome of his actions) obtains the lunar light and returns (to the cycle of life and death in this mortal world).

हिन्दी अनुवाद :-

धूम, रात्रि तथा कृष्णपक्ष और सूर्य के दक्षिणायन के छः महीनों का समय ; उस मार्ग में मर गया हुआ, सकाम कर्म करनेवाला योगी, उपर्युक्त क्रम से, चन्द्रमा की ज्योति को प्राप्त होकर, स्वर्ग में अपने शुभ कर्मों का फल भोगकर, इस जन्म-मृत्यु स्वरूप संसार में वापस आता है।

मराठी भाषान्तर :-

धूर, रात्र, कृष्णपक्ष, दक्षिणायनाचे सहा महिने अशा अंधकारमय काळात जे योगी मरण पावतात; ते चंद्रलोकास जाऊन पोचतात व पुन्हा जन्मास येतात.

विनोबांची गीताई :-

धूमानें रात्र कृष्णार्ध दक्षिणायन जोडुनी।
जाय तो परते येथ चंद्र लोकास पावुनी ॥ ८-२५ ॥

शुक्लकृष्णे गती हि एते जगतः शाश्वते मते ।

एकया याति अनावृत्तिम् अन्यया आवर्तते पुनः ॥ ८ - २६ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शुक्लकृष्णे	Shukla-Pakshe	bright and dark	शुक्ल और कृष्ण अर्थात् ज्ञानरूपी देवयान और पितृयान	शुक्ल व कृष्ण पक्षात (म्हणजेच ज्ञानरूपी देवयान व अज्ञानरूपी पितृयान)
गती	Gatee	(two) paths	मार्ग	मार्ग
हि	Hi	verily / indeed	क्योंकि	कारण
एते	Ete	these	ये दोन प्रकार के	हे दोन प्रकारचे
जगतः	JagataH	of the world	जगत् के	जगताचे
शाश्वते	Shaashvate	eternal	सनातन	सनातन
मते	Mate	(are) thought	माने गये हैं इन में	मानले गेले आहेत
एकया	Ekayaa	by one	एक ज्ञानमार्ग के द्वारा	(त्यांपैकी) एकाच्या द्वारा (गेलेला)
याति	Yaati	(he) goes	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
अनावृत्तिम्	Anaavrittim	to non-return	जिस से वापस नहीं लौटना पड़ता है तथा उस परमगति को	जिच्यापासून परत यावे लागत नाही अशा परम गतीला
अन्यया	Anyayaa	by another	और दूसरेअज्ञानमार्ग के द्वारा गया हु आ	दुसऱ्या मार्गाने (गेलेला)
आवर्तते	Aavartate	(one) returns	वापस आता है अर्थात् जन्म मृत्यु को प्राप्त होता है।	परत येतो (जन्ममृत्यू या चक्रामध्ये सापडतो)
पुनः	PunaH	again	फिर	पुन्हा

अन्वय :- जगतः एते हि शुक्लकृष्णे गती शाश्वते मते। एकया अनावृत्तिम् याति अन्यया पुनः आवर्तते ॥ ८ - २६ ॥

English translation: - These bright and dark paths of the world are deemed eternal; by one path a man goes not to return and by the other path he returns to the mortal world.

हिन्दी अनुवाद :- क्योंकि, जगत् के ये दो प्रकार के - शुक्ल और कृष्ण पक्ष, अर्थात् ज्ञानरूपी देवयान और अज्ञानरूपी पितृयान मार्ग सनातन माने गये हैं। इन में ज्ञानमार्ग के द्वारा गये हुए को वापस नहीं लौटना पड़ता है तथा वह परमगति को प्राप्त होता है; और अज्ञानमार्ग के द्वारा गये हुए को फिर वापस लौटना पड़ता है, अर्थात् वह जन्म - मृत्यु को प्राप्त होता है।

मराठी भाषान्तर :-

याप्रमाणे शुक्ल म्हणजे प्रकाशमय वा ज्ञानमय आणि कृष्ण म्हणजे अंधकारमय वा अज्ञानमय अशा जगताच्या दोन शाश्वत गती म्हणजे कायमचे मार्ग मानले आहेत. पहिल्या मार्गाने जाणारा मृत्युलोकात परत फिरत नाही म्हणजेच मुक्ती प्राप्त करतो आणि दुसऱ्या मार्गाने जाणारा, पुन्हा मृत्युलोकात जन्माला येतो.

विनोबांची गीताई :-

उजेड आणि अंधार दोन्ही मार्ग अनादि हे।
सुटका करितो एक एक फेऱ्यांत टाकितो ॥

न एते सृती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन ।

तस्मात् सर्वेषु कालेषु योगयुक्तः भव अर्जुन ॥ ८ - २७ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
एते	Ete	these	इस प्रकार इन दोनों	हे
सृती	Srutee	two paths	मार्गों को	दोन मार्ग
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
जानन्	Jaanan	knowing	तत्त्व से जानकर	तत्त्वतः जाणून
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी
मुह्यति	Muhyati	is deluded	मोहित तथा भ्रमित होता है	गोंधळून जातात
कश्चन	Kashchana	anyone	कोई भी	कोणताही
तस्मात्	Tasmaat	therefore	इस कारण	या कारणाने
सर्वेषु	SarveShu	in all	तुम सब	सर्वात
कालेषु	KaaleShu	in times	काल में	काळांमध्ये
योगयुक्तः	YogayuktaH	steadfast in Yoga	समबुद्धिरूप योग से युक्त	(समबुद्धिरूप) योगाने युक्त
भव	Bhava	be	हो जाओ	हो
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :- हे पार्थ ! एते सृती जानन् कश्चन योगी न मुह्यति, तस्मात् हे अर्जुन ! (त्वम्) सर्वेषु कालेषु योगयुक्तः भव ॥ ८-२७ ॥

English translation:-

O Arjuna! No Yogi is deluded by knowing well these two paths. Therefore, O Arjuna, try to be steadfast in Yoga at all times.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन! इस प्रकार इन दोनों मार्गों को तत्त्व से जानकर कोई भी योगी मोहित तथा भ्रमित नहीं होता है। इस कारण, हे अर्जुन! तुम सब काल में समबुद्धिरूप योग से युक्त हो जाओ; अर्थात् निरन्तर मेरी प्राप्ति के लिये, प्रयत्न करनेवाले बन जाओ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना! वरील दोन्ही मार्ग जाणणारा योगी केव्हाही गोंधळून जात नाही; म्हणून हे पार्था, तू सर्वकाळी योगयुक्त होण्याचा प्रयत्न कर.

विनोबांची गीताई :-

असे हे मार्ग जाणूनि योगी मोह न पावतो।
म्हणूनि सर्वदा राहें योगानें जोडिला चि तूं ॥ ८-२७ ॥

वेदेषु यज्ञेषु तपः सु च एव दानेषु यत् पुण्यफलम् प्रदिष्टम् ।
अत्येति तत् सर्वम् इदम् विदित्वा योगी परम् स्थानम् उपैति च आद्यम् ॥ ८ – २८ ॥

शब्द	शब्दोच्चार	English	हिन्दी	मराठी
वेदेषु	VedeShu	in Vedas	वेदों के पढ़नें में	वेदांमध्ये
यज्ञेषु	YadneShu	in sacrifices	तथा यज्ञ	यज्ञांमध्ये
तपःसु	TapaH	in austerities	तप	तपामध्ये
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	also	निःसन्देह	निश्चितपणे
दानेषु	DaaneShu	in gifts	दान आदि के करने में	दानांमध्ये
यत्	Yat	whatever / that	जो	जे
पुण्यफलम्	PuNya-Phalam	fruit of merit	पुण्यफल	पुण्यफळ
प्रदिष्टम्	PradiShTam	is declared / is assigned to	कहा है	सांगितले आहे
अत्येति	Atyeti	rises above / goes beyond	उल्लङ्घन कर जाता है	उल्लंघन करून जातो
तत्	Tat	that	उस	ते
सर्वम्	Sarvam	all	सब को	सर्व
इदम्	Idam	this	इस रहस्य को	हे (रहस्य)
विदित्वा	Viditvaa	having known	तत्त्व से जानकर	तत्त्वतः जाणून
योगी	Yogee	Yogi	योगी पुरुष	योगी पुरुष
परम्	Param	supreme	परम	श्रेष्ठ
स्थानम्	Sthaanam	abode	पद को	पद
उपैति	Upaiti	attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
च	Cha	and	और	आणि
आद्यम्	Aadyam	primeval	सनातन	सनातन

अन्वय :-

योगी इदम् विदित्वा, वेदेषु यज्ञेषु तपःसु दानेषु च एव यत् पुण्यफलम् प्रदिष्टम्, तत् सर्वम् अत्येति, आद्यम् परम् च स्थानम् उपैति ॥ ८ – २८ ॥

English translation:-

The Yogi, who knows this, transcends the fruits of meritorious deeds attached to the study of the Vedas, sacrifices, austerities and gifts and (ultimately) attains to the Supreme Primeval Abode.

हिन्दी अनुवाद :-

योगी पुरुष, इस रहस्य को तत्त्व से जानकर, वेदों के पढ़नें में तथा यज्ञ, तप और दान आदि के करने में, जो पुण्यफल कहा है; उस सब को निःसन्देह उल्लङ्घन कर जाता है और सनातन परमपद को प्राप्त होता है।

मराठी भाषान्तर :-

योग्याला (अर्जुनाच्या सात प्रश्नांच्या उत्तरांचे) ज्ञान प्राप्त झाल्यामुळे वेद, यज्ञ, तप आणि दान यांमध्ये सांगितलेल्या पुण्यफळांच्या पलीकडच्या आद्य, परमोच्च पदाला म्हणजेच मोक्षाला तो जाऊन पोहोचतो.

विनोबांची गीताई :-

यज्ञांत दानांत तपांत तैसें ज़ें बोलिलें अध्ययनांत पुण्य।
तें लंघितो सर्व चि ज़ाणुनी हें योगी चढें आद्य पदास थोर ॥ ८ – २८ ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the eighth discourse designated as "The Yoga of Imperishabe Brahman".

आठव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

सदा ध्याती मातें हृदयकमळी जे स्थिर मने ।
तया मी देहान्ती सुख अमित देतो हरि म्हणे ॥
तरी पार्था माझें निशिदिनिं करी ध्यान भजन ।
मिळूनी मद् - रूपीं मग चुकविसी जन्ममरण ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे . स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे . मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।
पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥